Kaushal Kumar
B. A. III
Eco- VI

जबकि लोगों की राज अधिक माँग भी था। बिना माँग के वस्तु का उत्पादन, आविष्कार की स्थिती में, माँग को बढ़ाता है। युद्धकालीन युद्ध सामान की माँग समाप्त हो गई। दूसरे शब्दों राष्ट्रीय व्यापार व उत्पादन की माँग कम कर दी इससे अधिक उत्पादन को खपाना मुश्किल हो गया और उत्पादन और उपभोग में की असन्तुलन मूल्यों में गिरने की प्रवृति को बढ़ाया। इसमें धन का असमान वितरण, एकाधिकरण, प्रतियोगिता पर नियन्त्रण तथा सरकारी नीति ने योगदान दिया।

(ix) कृषि आय में कमी :- उस समय तक अमेरिका में कृषि की प्रधानता थी और अधिकांश जन जीवन का आधार थी पर कृषकों की ऋणग्रस्तता, विक्रय-संगठनों का अभाव, विदेशों में निर्यात में कठिनाई से अतिरिक्त उत्पादन का स्टॉक उत्तरोत्तर बढ़ता गया और कृषि जन्य पदार्थों की कीमतों में 60% की भारी कमी से कृषकों की क्रय-शक्ति बहुत कम हो गई जिससे औद्योगिक माल की कीमतों में गिरावट आई।

(x) अव्यावहारिक बैंकिंग नीति :- बैंकों की उदार ऋण नीति से ऋणों में भारी वृद्धि हुई। सट्टे में धन की उधार की सीमा उच्च बढ़ गई थी ऊँची दरों पर विनियोग होने लगे और ऋण की मात्रा बढ़ती गई पर ज्योंहि मंदी का आविर्भाव हुआ त्योंहि प्रतिभूतियों के मूल्य गिरने लगे। बैंकों के फेल होने का दौर चला और जनता में असंतोष से बैंकों लड़खड़ाती स्थिती ने औद्योगिक स्थिति को झकझोर दिया। इसको पेचीदा बनाने में वाल स्ट्रीट का योग भी कम न था।

(xi) आर्थिक राष्ट्रवाद व विदेशी व्यापार में कमी :- प्रथम विश्वयुद्ध के बाद विश्व के सभी राष्ट्रों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के बजाय आर्थिक राष्ट्रवाद की प्रवृति प्रबल हो रही थी। प्रतिबन्धात्मक संरक्षण की नीति से विदेशी व्यापार में कमी हुई तथा अति-उत्पादन की समस्या जटिल बनी।

महान आर्थिक मन्दी के निवारण के उपचार

(Measures To fight thee great Depression) :- आर्थिक मंदी के दुष्प्रभावों का विवेचन यह स्पष्ट करता है कि इस महान ऐतिहासिक मंदी ने अमेरिकी अर्थव्यवस्था के प्रत्येक पहलु को प्रभावित किया था। इन आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक दुष्प्रभावों के निवारण के लिए अनेक प्रकार के

Cont-

अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन उपचार बताये गये। आर्थिक मंदी की शुरुआत अक्टूबर 1929 को राष्ट्रपति हूवर (President Hoover) के समय में हुई थी। राष्ट्रपति हूवर रिपब्लिकन दल के सदस्यों के समर्थक थे। उनकी पार्टी स्वतंत्र व्यापार और निर्बाध नीति के समर्थकों की ओर थे। आर्थिक क्षेत्र में सरकार के कम से कम हस्तक्षेप के पक्षधर थे। उन्होंने आर्थिक मंदी को अल्पकालीन समझा तथा उनकी यह धारणा थी वह अपने आप टल जायेगी। यही कारण था कि प्रारम्भ में कोई प्रभावी कदम नहीं उठाये गये। पर स्थिति बिगड़ गई और समस्या का उपचार अति आवश्यक हो गया तब हूवर ने कतिपय उपचारों की शुरुआत की।

(1) राष्ट्रपति हूवर (Hoover) के शासन काल में मंदी के उपचार:-

जब 1929 में स्टॉक मार्केट संकट ने अपना असली रूप धारण कर लिया तो राष्ट्रपति हूवर ने सामान्य व्यवसाय एवं मजदूरी की प्रचलित दरों में स्थायित्व रखने के लिए उद्योग पतियों से सहमति प्राप्त की। अर्थव्यवस्था में स्थायित्व बनाये रखने के लिए प्रयत्न असफल सिद्ध हुए वस्तुओं के मूल्यों में तेजी से गिरावट तथा बेकारी का दबाव बढ़ता जा रहा था। ऐसी परिस्थिति में सार्वजनिक व्यय में वृद्धि कर क्रय शक्ति प्रदान करने तथा रोजगार उपलब्ध कराने के अलावा कोई विकल्प नहीं रहा। इस कारण कांग्रेस को सब सार्वजनिक कार्यों पर व्यय को बढ़ाने में अधिक इच्छुक थे और साथ ही साथ निजी व्यक्तियों, कम्पनियों तथा संस्थानों का भी अधिक निर्माण कार्यों को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य रखा गया।

1929 में कृषि विपणन अधिनियम (Agricultural Marketing act) के अन्तर्गत स्थापित संघीय कृषि मण्डल (Federal farm Board) ने अनाज और कपास की कीमतों को बढ़ाने के लिए अनाज एवं कपास स्थिरीकरण निगम

Grain and Cotton Stabilization corporation)

स्थापित किया गया और इस निगम ने अपने कार्य की पूर्ती के लिए लगभग 50 करोड़ डॉलर व्यय किया।

Cont